03

श्रीफल जैन न्यूज

दाढ़ी, मूंछ के बाल हाथ से उखाड़ता हूं, चटाई पर सोता हूं, स्नान नहीं करता हूं, मेरा परिवार, घर भी नहीं होता है।

धर्म प्रभावना के लिए मैं एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैदल विहार करता रहता हूं। श्रावकों को पढ़ाता हूं, ध्यान करता हूं, चिंतन करता हूं, आत्म चिंतन और दर्शन के लिए तीर्थक्षेत्रों की यात्रा भी करता हूं । श्रावकों को उपदेश देकर उन्हें धर्म के मार्ग पर लगाता हूं। पुण्य कार्य करने की प्रेरणा देता हूं।